International Journal ofApplied Research 2016; 2(7): 344-346

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(7): 344-346
www.allresearchjournal.com
Received: 27-05-2016
Accepted: 28-06-2016

कांता रानी
गांव बप्प जिला सिरसा हरियाणा, भारत।

Correspondence
कांता रानी
गांव बप्प जिला सिरसा हरियाणा, भारत।

मृणाल पाण्डे के साहित्य में आर्थिक विशमताएं

कांता रानी

प्रस्तावना

अर्थ का व्यक्ति और समाज के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। आर्थिक परिस्थितियां मनुष्य और समाज के मन तथा मनोविज्ञान को असाधारण और कभी–कभी स्थायी रूप से प्रभावित किया करती है। भारतीय संस्कृति ने भी अर्थ का महत्व स्वीकार किया करती है। भारतीय संस्कृति ने भी अर्थ का महत्व स्वीकार किया है और तभी मनुष्य के चार पुरूषार्थ में इसे एक प्रमुख स्थान दिया है। अबाधित होकर अर्थ, अनर्थ में परिवर्तन हो जाता हैं यही सोचकर इससे अधिक प्राथकिता धर्म को दे दी गई। लोक तो धर्म को भी इसके बाद स्थान देने की प्रवृति प्रदर्शित करता हुआ कहता है, ''भूखे भाजन न होय गोपाला, ले लो अपनी कण्ठी माला।''[1]

''अर्थ का परिगणन मानव के चार पुरूषार्थों में किया गया है। अर्थ एक व्यापक प्रत्यय है, जिसके अर्न्तगत उन समस्त साधनों का समाहार है, जिससे धन सम्पति अर्ज के साथ सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती हैं''[2] जिस वस्तुओं के उत्पादन के लिए मनुष्य को परिश्रम करना पड़ता है, उन्हें आर्थिक वस्तुएं कहा जाता है इन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए 'अर्थ' की आवश्यकता होती है तथा आर्थिक वस्तुओं के उत्पादन, उपभोग, विनिमय और वितरण से सम्बन्धित मानवीय क्रियाओं को ही हम आर्थिक क्रियाएं करते हैं।''[3]

हिन्दी साहित्य में अर्थ का प्रयोग तीन अर्थों में मिलता है, 'शब्द' के अर्थ के रूप में, धन सम्पति आदि के रूप में, अर्थ विज्ञान के रूप में। गोण अर्थ में यह शब्द अभिप्राय प्रयोजन आदि के रूप में मिलता या व्यवहृत होता है। मनुष्यों की जीविका को अर्थ कहते हैं 'कौटिल्य ने अर्थशास्त्र ने धर्म और काम का मूलाधार अर्थ ही बताया है।''[4]

'अर्थ' मानव की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह सम्पूर्ण मानवीय क्रियाओं का संचालक बन गया है। व्यक्ति की समाज में क्या स्थिति है? अतः उसकी प्रतिष्ठा का मापदण्ड भी यही अर्थ है। आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्ति ही समाज में श्रेष्ठ स्थान पाने का अधिकारी है। अतः मानव की सम्पूर्ण आकांक्षाएं, उसकी मान्यताएं एवं आदर्श बिखर चुके है। वर्तमान समय में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप धारण कर चुका है। ''एक और गगनचुम्बी भव्य भवनों में स्वर्ण की झांकियां प्रस्तुत हैं तो दूसरी तरफ दरिद्रता से जर्जर सामान्य जन दयनीय अवस्था के चित्र बने हुए हैं सामान्य जन को दो वक्त की रोटी के भी लाले पड़े हुए हैं यह आर्थिक वैशम्य समाज की ऐसी खाई जिसे पाटना कोई सरल कार्य नहीं है।''[5]

'अर्थ' वह मुद्रा है, जिसके द्वारा मानव अपनी दैनिक आवश्यकताओं तथा सुख–सुविधाओं का सामान जुटाता है। परिश्रम के द्वारा मानव 'अर्थ' को प्राप्त करता है। परिश्रम के बदले जो पारिश्रमिक मिलता है, वह अर्थ है। श्रम के महत्व को स्वीकारते हुए मैथिलीशरण गुप्त जी कहते है, ''श्रम के बिना मनुष्य अकर्मण्य हो जाता है और उसे उल–जलूल बातें सूझने लगती है। यदि बिना प्रयास ही लोगों को खाने–पीने को मिल जाए तो गुप्त जी के विचार से न कोई कुछ मानेगा न जानेगा। डॉ. विजय वर्गीय जी कहते हैं कि ''रोटी की सबको आवश्यकता है। अतः उस पर सबका न्यायपूर्ण अधिकार भी है। परन्तु अन्न स्वर्ग से नहीं गिरता और रोटी नभ से नहीं बरसा करती, उसके लिए प्रत्येक को श्रम करना पड़ता है।''[6]

''शोषण शब्द का शब्दकोषीय अर्थ है – सोखना, सूखना, नाश करना, दुर्बल या अधीनस्थ के पश्रिम, आय आदि से अनुचित लाभ उठाना। जब कोई व्यक्ति अन्य दीन हीन व्यक्ति के अधिकारों का हनन करता हैं और उसके अधिकारों को अपने स्वार्थसिद्धि के लिए प्रयुक्त करता हैं तो ऐसी दशा में वह उसका शोषण करता है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक मनुष्य के जीवन में अनेक परिवर्तन आए हैं। जहां अगर कभी उसकी स्थिति में सुधार होता आया वहीं दूसरी ओर उसकी दशा दयनीय भी रही है। आज चाहे उन्नति करके बड़े से बड़े पद पर पहुंच सका हो लेकिन उसकी समस्याओं में, उसके शोषण में कमी नहीं आई आज भी हर जगह मनुष्य कभी सामाजिक

रूप से, कभी आर्थिक रूप से, तो कभी राजनीतिक या मानसिक रूप से उसका शोषण होता रहा है और नारी शोषण इनमें सर्वाधिक मात्रा में हुआ। यद्यपि आज की नारी अधिक पढ़ लिख रही है। शोषण के खिलाफ आवाज भी उठाती है परन्तु यह स्थिति केवल कुछ वर्ग ही स्त्रियों की है, गांव में रहने वाली स्त्रियां आज भी निरन्तर शोषण की चक्की में पिस रही हैं।

मृणाल पाण्डे जी ने अपने साहित्य में ऐसी अनेक महिलाओं की समस्याओं का वर्णन किया है, जिनका समाज में किसी न किसी रूप में शोषण किया जाता है पाण्डे जी ने अपने निबन्धों में अनेक क्षेत्रों की महिलाओं के आंकड़ों को जांचा है और बताया है कि निम्न क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति अधिक शोचनीय है।

हमारे समाज में लड़की का जन्म होना ही अभिशाप समझा जाता है। यहीं से उसका शोषण होना आरंभ हो जाता है, परिवार में लड़के लड़कियों को भेद की दृष्टि से देखा जाता है, एक तरफ तो मां के रूप में प्रताड़ित किया जाता है। बार–बार उनका गर्भ नष्ट कर दिया जाता है। एक तरफ मां का स्वास्थ्य गिरता जाता है तो दूसरी तरफ अनेक लड़कियों को जन्म से पहले ही खत्म कर दिया जाता है। उसे परिवार वालों के दबाव में आकर अपनी ममता और सेहत का गला घोंटना पड़ता है। ''इसी दबाव के चलते अम्नीयोसेटेसिस नामक गर्भ–जल परीक्षण से भ्रूण का लिंग पता करके हजारों माता–पिता आज कन्या भ्रूण को गर्भ में ही नष्ट करवा देते हैं। इसी कारण जन्म से लेकर 5 वर्ष की आयु के बीच मरने वाले बच्चों में भी कन्याओं का अनुपात भी प्राकृतिक रूप से ऊंचा पाया गया है।''[7]

विवाहित स्त्री हर तरफ से शोषण का शिकार होती है। यदि उसका पति शराबी है तो उसे अपने परिवार का पालन–पोषण करने के लिए स्वयं ही काम पर जाना पड़ता है, जबकि पति शराब पीकर मौज–मस्ती उड़ाते हैं और नारी को घर बाहर दोनों तरफ शोषण को शिकार होना पड़ता है। कचरी देवरयापल्ली गांव की बूढ़ी लक्षम्मा के शब्दों में ''हम औरतें क्या जानती हैं। हम कमरतोड़ काम पर जाती हैं। घर लौट आती हैं। दिनभर बाहर खट के फिर बच्चों में, फिर खाना पकाने में खटती हैं। मर्द तो सब कुछ जानते हैं, पर वे काम के बाद कहीं भी जाकर अरक पीने बैठ जाएंगे। इस दुनिया में इस शराब का नाम मिट जाना चाहिए। क्या अरक की कमाई के बिना सरकारें नहीं चल सकती? अगर नहीं, तो फिर कह दो सरकार से कि इन पियक्कड़ों को वह पालें।''[8] बलात्कार की शिकार महिलाएं एक तरफ तो दयनीय स्थिति से गुजरती ही हैं, समाज भी उन्हें घृणा की दृष्टि से देखता है।

''भारत के दूरदराज के गांवों में मोटे तौर पर आज भी हालात ऐसे हैं कि यदि आप एक दलित है उस पर भी औरत जात, तो प्रताड़ना और उत्पीड़न आपके जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनते चले जाते हैं। अधिकार औरतें इसे अपनी नियति मानकर हर तरफ के अत्याचार और अन्याय को मूक होकर झेलती आई है।''[9]

मृणाल पाण्डे ने एक उदाहरण भंवरी बाई का दिया है जो कि एक कुम्हार जाति का अनिवार्य हिस्सा बनते चले जाते है। अधिकतर औरतें इसे अपनी नियति मानकर हर तरफ के अत्याचार और अन्याय को मूक होकर झेलती आई है।''[10]

मृणाल पाण्डे ने एक उदाहरण भंवरी बाई का दिया है जो कि एक कुम्हार जाति की महिला है वह समाज सेविका भी है, उसने गैर कानूनी बालविवाह को रोकने की आवाज उठाई तो उसे समाज से निकाल दिया गया और उसके साथ बलात्कार किया गया ''राजस्थान की बस्सी तहसील के इस लगभग चर्चित गांव में जाति से कुम्हार भंवरी बाई 'साधिन' (समाज सेविका) का काम करती हैं सरकारी प्रोत्साहन पर अपने गांव में गैर कानूनी बाल विवाह रोकने का बीड़ा उठाने वाली भंवरी को इस सामाजिक पुनरूत्थान कार्य की ऐवज में समाज के ठेकेदारों से 'पुरस्कार' मिला। पहले आर्थिक और सामाजिक बहिष्कार और अंततः सामूहिक बलात्कार के रूप में।''[11]

देखा जाए तो लड़कियों का सबसे ज्यादा शोषण घर में होता है। ''हिन्दी क्षेत्र की अधिकांश कन्याओं की मृत्यु जन्म के पहले उन पांच सालों के बीच होती है जब वे पूरी तरह परिवार के संसाधानों पर अपनी जीवन–रक्षा के लिए निर्भर होती हैं। लड़कियों की इस अकाल मृत्यु के कारण मात्र जैविक नहीं, बल्कि आर्थिक और सांस्कृतिक भी है।''[12]

आर्थिक रूप नारी कितनी ही समृद्ध हो चुकी है लेकिन आर्थिक शोषण का शिकार वह फिर भी होती है। ''कामकाजी महिलाएं आर्थिक विवशतओं के कारण घर से बाहर की यात्रा करती हैं। रोजगार पेशा नारी को अपने कार्यालय में शोषण के बीच गुजरना पड़ता है, जहां उसका बॉस या सहकर्मी विभिन्न तरीके से शोषण करते हैं।''[13] इसके अतिरिक्त असंगठित और अनपढ़ स्त्रियां अपने अधिकारों से वंचित रह जाती हैं। हजारों औरतें जो कि काम करके गुजारा चलाती हैं, मशीनों के आने पर उन्हें निकाल दिया जाता है, जिनकी मदद न सरकार करती है, न ही उनके मालिक। ''धान की रोपाई की भी मशीनें आ रही हैं तर्क दिया जा रहा है कि हाथ से होने वाली रोपाई की भी मशीनें आ रही हैं तर्क दिया जा रहा है कि हाथ से होने वाली रोपाई की अपेक्षा इस तरह लगाया धान ज्यादा सस्ता होगा। पर बेदखल हुई धान रोपने वाली वे औरतें कहां जाएंगी, यह शायद वित्त मंत्रालय का सिरदर्द नहीं। न ही यह उनका सिरदर्द है कि गरीब महिलाओं के विकास के लिए आबंटित राशि उन्हें कितनी मिल पाती है?''[14]

आज के समय में महिलाएं राजनीतिक क्षेत्र में यद्यपि ऊंचा पद पा चुका है पूर्ण अधिकार अभी भी नहीं मिले। कई स्थानों पर वे चुनावों में खड़ी तो होती है बड़ी मात्रा में, परन्तु चुनावों के बाद कांट–छांट कर उनकी संख्या दो या तीन ही रह जाती है। ''जरूरत इस बात की है कि सभी पार्टियों द्वारा अपने द्वारा उठाए गए चुनावी मुद्दों प्रचार कार्य तथा प्रत्याशी चयन इन तीनों क्षेत्रों में महिलाओं के मन को सीधे प्रभावित और आकृष्ट करने के लिए महिलाओं को उसमें जोड़ा जाए और उनके लिए जरूरी वातावरण और संसाधनों का प्रबन्ध किया जाए। जब–जब यह हुआ है, इसका सीधा नतीजा सामने आया है। साफ–सुथरे चुनावों और क्रांतिकारी राजनीतिक परिवर्तनों के रूप में।''[15]

इस प्रकार हर प्रकार से सक्षम होकर भी नारी पुरूषों द्वारा शोषित होती है। ''एक अरूंधती राय चौधरी अपने मधुर कंठ से पवित्र ऋचाओं के पाठ से वातावरण को पवित्र करें, तो कंठमुल्लों और धर्माधिकारियों के पारे चढ़ने लगते हैं, लेकिन किन सैंकड़ों कनीजाएं, अमीनाएं, बूढ़े शेखों के साथ भेड़–बकरी की तरह बिकती रहे या भंवरी बाई जैसी समाज सेवी साथिनों के साथ बलात्कारी होते रहे, वे मुंह में दही जमाए बैठे रहते हैं।''[16]

किसी मनुष्य को जीवन की आवश्यकताएं, सुविधाएं और मनोरंजन के साधन समुचित परिणाम में ना मिलें तो इसे हम गरीबी कह सकते हैं। गरीबी इस देश की स्वतंत्रता से पहले भी स्थायी पहचान थी और स्वतंत्रता के पश्चात् गरीबी और अधिक बढ़ी है। गरीबी के कारण व्यक्ति असहाय बन गया है। ''व्यक्ति की असहाय अवस्था का कारण धन की कमी है। आर्थिक सुदृढ़ता व्यक्ति को टूटने से बचाती है।''[17] मृणाल पाण्डे जी ने भी आर्थिक विपन्नता से जूझती मानवीयता को अपना प्रतिपाद्य बनाया है। 'दरम्यान' कहानी –संग्रह की 'ऑर्डर' कहानी में आर्थिक विपन्नता में घुलते परिवार के सदस्यों की मानसिकता का सफल चित्रण हुआ है। शहरी परिवेश में पला युवक जो व्यक्तिवादी प्रवृतियों का पोषक है, उसे उस वृद्ध के घर की हर चीज में निर्धनता ही नजर आती है। ''दीवार पर टंगी घड़ी की दोनों सुईयां नदारद है, पर वह चल रही है – न जाने कब से समयहीन घंटे–मिनटों का निर्देश करती हुई – पास से गुजरती कारों की हैडलाईट्स कभी–कभी अचानक कमरे की परछाईयों से

भर जाती है, तब सारा स्थिर जड़ कमरा पैंडुलम की माफिक डोल उठता है।''[18] निर्धनता की मार इंसान को कितना चिड़चिड़ा बना देती है, 'चिमगादड़े' कहानी में यह तथ्य स्पष्ट रूप से उभर कर आया है मारिया की मां जो पति की मृत्यु पर घर का खर्चा बड़ी मुश्किल से चला पाती है, जरा सा पैसे खर्च करने की बात पर उबल पड़ती है मारिया की मां जो पति की मृत्यु पर घर का खर्चा बड़ी मुश्किल से चला पाती हैं, जरा सा पैसे खर्च करने की बात पर उबल पड़ती हैं मारिया के डॉक्टर को बुलाने की बात सुनकर चिल्लाते हुए कहती है, ''ऊपर से और एक लम्बा बिल थमा जाएगा कमबख्त! मैं इन लालची नेटिव डॉक्टरों को खूब जानती हूँ। यहाँ पैसे–पैसे को सोचकर कमबख्त! मैं इन लालची नेटिव डॉक्टरों को खूब जानती हूँ। यहाँ पैसे–पैसे को सोचकर खर्च करना पड़ता है कि किसी तरह महीना आराम से कट जाए – दवा का बिल कौन...।''[19] इस प्रकार के आर्थिक प्रभाव कुंठाओं और पारिवारिक मन–मुटावों को जन्म देते हैं। मध्यवर्गीय व्यक्ति को हर कदम पर समझौता पड़ता है।

निश्कर्शः

कहा जा सकता है कि आर्थिक स्तर पर चाहे देश में विकास की वृद्धि उत्तरोत्तर बढ़ी हो पर महंगाई भी उसी अनुपात से बढ़ती रही। आज एक ओर तो बेरोजगारी के बढ़ते साये हैं और दूसरी और महंगाई की खाई।

संदर्भ सूची

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, आधुनिक हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि, पृ.20
2. डॉ. राम सजन पाण्डेय, निर्गुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका, पृ.29
3. बी.एल. गुप्ता, प्रारंभिक अर्थशास्त्र ,पृ.1
4. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, पृ.7
5. डॉ. रविन्द्र कुमार सिंह, संत काव्य की साामजिक प्रासंगितकता, पृ.57
6. डॉ. प्रेमचंद विजय वर्गीय, आधुनिक हिन्दी कवियों का सामाजिक दर्शन पृ.297
7. मृणाल पाण्डे, परिधि पर स्त्री, नारी तुम केवल टारगेट हो, पृ. 62
8. मृणाल पाण्डे, परिधि पर स्त्री, हजार बरस की असमानता क्यों, पृ.31
9. वहीं, भंवरी का नाम है एक नजर का, पृ.41
10. वहीं, पृ.39
11. वहीं, पृ.39
12. मृणाल पाण्डे, क्या बरमूदा त्रिकोण है, हिन्दी पट्टी, पृ.99
13. नासिरा शर्मा, शालमली पृ.77
14. मृणाल पाण्डे, परिधि पर स्त्री, नारी तुम के पल उपभोक्ता हो, पृ.54
15. मृणाल पाण्डे, परिधि पर स्त्री, नारी तुमके पल उपभोक्ता हो, पृ.55
16. वहीं, त्रिभुज के बारे में सोचते हुए, पृ.103
17. डॉ. रमेशचन्द्र लवानिया, हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य, पृ. 227
18. मृणाल पाण्डे, दरम्यान, पृ.28
19. वहीं, पृ.21